साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 39, जून(द्वितीय), 2018

चाय गरम चैय, चाय गरम चाय...

आनंद कुमार

मनोहर बाबू के दरवाजे पर आज काफी चहल-पहल है, उनके यहां काम करने वाले फेकूआ से पूछने पर पता चला कि मनोहर बाबू का इस बार बी.पी.एस.सी. मेंस एग्जाम क्लियर हो गया है, पिता अवधेश बाबू तो आज छाती मोदी जी के तरह 56 इंच फूला के घूम रहें है, उतरवारी टोला से बुजुर्ग सब भी चाय की खातिर पधार रहे है, दरवाजे पर बैठे बुजुर्गों में से एक ने बोला है कि देखिए नौकरी आप कुछ भी करलो. लेकिन लोक सेवा आयोग का अलगे रूतबा है महराज, जब बी.डी.ओ बनेगा तो पूरा प्रखंड में राज करेगा, पैसा छाप के रख देगा महराज, तिलक दहेज कम से कम 15 लाख, औरो एगो चार चक्का, आप बोलिए तो हम बिहाने अगुआ ले कर आते है, पास बैठे एक अन्य बुजुर्ग विरेन्द्र बाबू ने भी हामी भरते हुए और मनोहर की तारीफ करते हुए कहा है कि ठीके बोले पदारथ चचा, अपना मनोहरा कम मेहनती नहीं न है, हम तो देखते थे तीन बजे भोरबा में लालटेन जरा (जला) के पढ़ा करता था, साईकिल से 15 किलोमीटर दूर जाकर पढ़ता था, अब बी.डी.ओ बनेगा तीन-चार पीढ़ी तार दिया महराज, दरवाजे पर चल रहे इस कॉन्फ्रेंस में 5 फीट 6" के मनोहर का आगमन हुआ है, सैमसंग का मोबाईल कान में सटाए सभी बुजुर्गों को हाफ प्रणाम (थोड़ा सा झुक के घुटने पर से ही) करते हुए मनोहर चुपचाप निकल गया है, अवधेश बाबू गुस्सा गए, ऐसे कौन प्रणाम होता है रे मनोहरा, पूरा झुक के प्रणाम करो, तू केतनो बड़का अफ्सर बन जाओ आडियो चाहे बी.डी.ओ. रहेगा तो तू हमर मनोहरे न, बिरेंद्र बाबू बात काटते हुए बोले है, अरे छोड़िए कोई बात नहीं कहीं फोनवा पर बतिया रहे है, मनोहर अब दूबारा प्रणाम किया है, अवधेश बाबू बोले - हां ये हुआ, संस्कार नहीं छोड़ो, इसके पश्चात मनोहर चले गए.

कुछ दिन बाद आयोग द्वारा इंटरव्यू के लिए बुलावा पत्र मनोहर बाबू के घर पहुंचा है, अवधेश बाबू दरवाजे पर बैठ के कुल्ला गलाली कर रहे हैं, फेकूआ जनेरा काट रहा है, पत्र प्राप्त करने के पश्चात डाकिया को अवधेश बाबू ने 2 रूपया और दो गुड्डे बिस्किट भी दिया है, अगले रविवार को इंटरव्यू है, मनोहर ने शनिवार को ही गांव से निकलकर आयोग द्वारा बताए गए पते पर पहुंचने का निर्णय लिया है, आज शनिवार है, पिता अवधेश जी जनेउ से पीठी रगड़ रगड़ कर नहा रहे है, हीरो होंडा मोटरसाईकिल को भी पोछ-पाछ कर चमका दिए है, मां ने लिटी बनाकर रखा है, सत्तू भी एक छोटी सी पोटली में रखी है, अवधेश बाबू मोटरसाईकिल स्टार्ट किए है, जिला मुख्यालय पहुंचना है, वहीं से ट्रेन है पटना के लिए, पास खड़े बुजुर्ग आशावादी नजरों से देख रहे है, स्टेशन पर पहुंचकर ट्रेन आते ही झट से अवधेश बाबू ने गमछा खिड़की से ही फेंक दिया है, दू-तीन और लोगों ने उसी सीट के लिए गमछा फेंका है, साला सीट न हुआ South China Sea हो गया, सब अपना-अपना आधिपत्य जता रहा है, विवाद बढ़ता जा रहा है, अवधेश बाबू तो एकदम तन गए कि अरे पहिले गमछा हम फेंके थे, मनोहर एक सभ्य, जिम्मेदार अधिकारी की तरह व्यवहार करते हुए विवाद को शांत किया है और बगल वाले सीट पर चला गया है, अवधेश बाबू पिनपिना गए आंय कंप्रोमाईज करेगा रे, जा रहा है इंटरव्यू देने, इंटरव्यू में सवाल पूछेगा कहीं कश्मीर इश्यू पर, तो तू क्या जवाब देगा, पाकिस्तान और चीन ऑक्यूपाईड कश्मीर से कंप्रोमाईज कर लेगा रे, मनोहर बोला - ओह पापा छोड़िए न कश्मीर और सीट का क्या कनेक्शन है, बहुत कनेक्शन है रे उल्टा पुल्टा जवाब दे के नाक मत कटवाना रे.

खैर धीरे-धीरे सीट का मामला शांत हुआ है, अब ट्रेन खुलने वाली है, अवधेश बाबू खिड़की पर आ चुके हैं, बोल रहें है सत्तू आधा घंटा बाद काला नमक के साथ घोर के पी लेना, आंख में आंख डाल के इंटरव्यू लेने वाले से बतियाना, माधोपुर वाले फूफा को बी.डी.ओ. बनकर देखा देना है कि अवधेशबा के लईका में केतना दम है, फूफा को बी.डी.ओ. बनकर देखाने की इस नई जिम्मेदारियों से लैस मनोहर अब चल पड़ा है, ट्रेन खुल चुकी है, अवधेश बाबू खैनी रगड़ने लगे है.

मनोहर बैग से बिहार सरकार की हेल्थ पॉलिसी वाला नोट्स निकाला ही था कि तभी एक मोहतरमा सुपरसोनिक वेग से भागती हुई आकर सामने वाली सीट पर आकर बैठी है, उनके साथ उनकी मां भी है, कुछ देर बाद उनकी मां सामने वाली सीट पर अतिक्रमण करती हुई लेट गई है ओर वो इनके बगल में आकर बैठ गई है, ट्रेन खुल चुकी है, सामने खिड़की से आ रही हवाओं के चलते मोहतरमा को नींद आ रही है, पहले सीट पर सर रख कर सोई थी, अब मनोहर कंधों पर सर रखकर सो रही है, बिहार सरकार हेल्थ पॉलिसी पढ़ते-पढ़ते खुद मनोहर का हेल्थ अब खराब होने वाला है, करेजा जनरेटर हो गया है,

व्हाईट ड्रेस और काले दुपट्टा में बड़ी क्यूट लग रही थी, इंद्रधनुषी भौंहों के बीच सूर्य समान चमकती बिंदी खूबसूरती और बढा रही थी, खिड़की से आ रही हवाओं से बालों की लट लहरा रही है, गाल पे बिखरी हुई इन गेसुओं को सोए सोए हाथ से कान के पिछू ले जाकर सजा रही थी, तो कभी बाल खुद उंगलियों से उलझ जा रही है.

ट्रेन पूर्ण रफ्तार में है, मनोहर हाथ में किताब लिए और मन ही मन सोच रहा है, भांड़ में जाए इंटरव्यू, यार ये किती खूबसूरत है, आँखे है या प्रशांत महासागर का मेरियाना ट्रेंच, पक्का पैंटिन शैंपू लगाती है, आमेजन बेसिन में भी इता घना जंगल नहीं है, जिता घना बाल, डिंपल तो प्रीति जिंटा जैसे है, इता जगह, दिल्ली में तो 2 बी.एच.के. का फ्लैट बन सकता है, उसे लग रहा कि यहीं है जिसका वो इंतजार कर रहा है, खुद को शाहरूख खान से कम नहीं समझ रहा है, बैक ग्राउंड में बज रहे सरसो खेत वाला गाना भी उसे अंतर्मन में सुनाई दे रहा है,

तूझे देखा तो ये जाना सनम,

प्यार होता है दीवाना सनम,

अब यहां से कहां जाए हम,

तेरी बाहों में मर जाए हम।

टिपिकल कुंवारे लौंडो की तरह मनोहर भी भविष्य की सोच रहा है, नंबर वन बिनाका बैंड बजवाएंगे, बेटा होगा तो नाम हर्षवर्धन और बेटी हुई तो मणिकर्णिका, दोनो इतिहास से प्रेरित नाम, कल्पनालोक में जी रहे मनोहर के कान में अचानक आवाज गई है,- “, चैय गरम चैय, चैय गरम चैय चाय लीजिए चैय"

मनोहर क्षण में ही कल्पना के ऐवरेस्ट से सीधा हिंदमहासागर में गिरा है, इतना कर्कश आवाज, अबे करैला खाता है क्या?, एक तो आप कितना भी बड़ा भाषाविद हो ट्रेन में बेचने के लिए बोली जा रही भाषा को समझने में आपका माथा बउरा

जाएगा, वो भी इस कर्कशता से उठ के बैठ गई है, मनोहर सोच रहा कि उफर परो तोहरा चाय के, ठनका गिरो तोहरा चाय पर, इतनी तेज आवाज, अब मनोहर फिर किताब निकाल कर देखने लगा है.

तभी फोन की घंटी बजती है, “साथी तेरा प्यार पूजा है”

मनोहर उठा कर बोला है हां पापा, अरे सतुआ पिया की नहीं रे मनोहरा, देख ले फूफा को BDO बनके देखा देना है, इंटरव्यू में तनिको दाब उलार नहीं होना चाहिए, हम तो अभी पिंटूआ के दुकान पर है, पिंटुआ के बाबु जी यहीं है असीरवाद (आशीर्वाद) ले लो.

मनोहर को फिर जिम्मेदारियों का डोज दिया जा चुका है, इस बार वो Bihar सरकार की हेल्थ पॉलिसी को पूरा पढ़ेगा, लेकिन बगल में बैठी उर्वशी को देख फिर उसकी चैतन्यता सरेंडर बोल चुकी है, अगले स्टेशन पर मोहतरमा को उतरना है, सामान उतरवाने में मनोहर ने टिपिकल बाॅलीवुडिया स्टाईल में सहयोग की इच्छा प्रकट की है,

सामान उतरवाने के पश्चात मोहतरमा से खूंखार शब्द सुनने को मिला है- “थैंक्यू , आप कितने क्यूट हो न” मनोहर जी,

मैने आपका नाम Books पर पढ़ लिया है, आप इंटरव्यू देने जा रहे हो, इंटरव्यू में सफल हो, शुभकामना है, बाकी दुनिया गोल है, समय ने चाहा तो फिर मिलते है.

इन शब्दों को मनोहर चाह रहा कि लेमिनेशन करवा के फाईल मे सर्टिफिकेट्स के बीच में रख ले, लेकिन बर्बाद निगाहों से उसे जाते हुए देख रहा है, ट्रेन की सीटी बजी है, तभी बगल से फिर चाय वाला गुजरा है, चिचियाते हुए - "चैय गरम चैय, चाय गरम चाय"

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें